॥ प्रश्नचूडामणि: ॥

केरल ग्रंथ:

—०:०:०—

कपूरस्थल निवासि गौतम गोत्र शोरि अन्वयालंकृत श्री देवज्ञ दुनिचन्द्रात्मज पंडित विष्णुदत्त वैदिकेन भाषा टीका सहित विरचित: ।

तेनैव

राजनियमानुसारेण स्वायत्तीकृत्य प्रकाशित:

पुस्तक मिलने का पता :—

पं० विष्णुदत्त वैदिक जी संस्कृत पुस्तकालय

मुकाम कपूरथला स्टेट ।

KAPURTHALA:

१८ लाहौर ९६

पञ्जाब एकानोमीकल प्रेस में प्रिंटर लाला लालमन के अधिकार से छपी ।



मूल्य ।/)

॥ विज्ञापन ॥

यद्यपि ज्योतिष प्रश्नविषयक अनेक ग्रन्थ छपे हैं तथापि सुगमता पर चमत्कारी ऐसा ग्रन्थ आजतक नहीं छपा सो प्रशंसा देखने पर है, हमारे यहां निरर्थक कोई पुस्तक नहीं छपता, हमारी दुकान का यश पुस्तकों की उत्तमता हिंदुस्तान भर में विशद है। अब हमने उपकारार्थ औषधालय खोला है, इस में सिद्ध औषधी धनाड्यों को कीमत पर दरिद्रों को मुफ्त बांटी जाती हैं। आप को उचित है जो हमारा विज्ञापन सूचीपत्र मिले वह सर्वत्र बांट विशद करें तो अधिक तर प्रेमानन्द है ॥

आपका हितैषि,

दैवज्ञ दुनिचंद्रात्मज पं० विष्णुदत्त वैदिकजी

संस्कृत पुस्तकालयाधिपति

कपूरथला स्टेट

अथ

प्रश्नचूडामणिप्रारम्भः

ओंस्वस्ति श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीजगदं
बायैनमः ॥ साम्बशिवायनमः सुवंद्यंचपि
लाशाम्भोर्भगिनीपुत्रंनमाम्यहम् ॥ सारात्सा
रंसमुद्धृत्यप्रश्नचूडामणिंब्रुवे ॥ १ ॥ अती
तानागतश्चैववर्तमानशुभाऽशुभम् ॥ ला
भालाभंसुखंदुःखंजयंचैवपराजयम् ॥ २ ॥
मनोमध्येतुयाचिंतामुष्टिसैन्यचलाचलं ॥
लोहपातंपारधिंचगर्भंचप्रसवंस्त्रियः ॥ ३ ॥
छत्रभंगंराष्ट्रभंगंग्रामंचदुर्गभंगकम् ॥ परो
क्षमंत्रभूपानांवर्षाकालेजलागमम् ॥ ४ ॥

तस्करंचसभाचौरंअर्घंचबंदिमोक्षणम् ॥
सत्यासत्यशुभावार्ताराजकार्यस्यवानवा ॥
॥ ५ ॥ कृपाश्चैवकृपाराज्ञाअधिकारस्थिरा
स्थिरम् ॥ आगमानागमंसेवाशत्रोरागमनं
तथा ॥ ६ ॥ नृपकृपागमफलंयदाप्राप्तेशु
भाशुभम् ॥ कार्येविलंबंशीघ्रंचग्रामेचैवशु
भाशुभम् ॥ ७ ॥

भाषाटीका·

ओंश्रीगणेशायनमः ॥

प्रणम्यपरमानंदं जगद्वंद्यंविनायकम् ।
कर्तारमस्यशास्त्रस्य शिवंविद्याविवृद्धये ॥

अथ ग्रंथकार निर्विघ्न ग्रंथकी समाप्ति इच्छा कर्ता प्रथम नमस्कारात्मक मंगल कर्ता है ॥ सुवंद्यमिति ॥ (सुवंद्यं) भली प्रकारसे पूजनेयोग्य (चापिला-शत्रोर्भगिनीपुत्रम्) कंसकी भगनीका पुत्र श्रीकृष्ण

देवको मैं प्रणाम कर केरलग्रंथोंके सारसे सार निकाल यह प्रश्नचूडामणि प्रकाश कर्ता हूं ॥ १ ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान शुभाशुभ लाभ अलाभ सुख दुःख जय पराजय मनकी चिंता सृष्टिज्ञान सैन्यका स्थिर वा भागना लोहपात शिकारी गर्भ प्रसव छत्रभंग राष्ट्रभंग ग्रामदुर्गभंग परोक्ष मंत्र वर्षायोग चौर सभाचौरज्ञान अर्घ बंदीमोक्ष सत्य असत्य शुभ वार्ता राजाकी कृपा अधिकारप्राप्ति सेवा शत्रुगमन इत्यादि ॥

मूल ।

आदौपुंसःस्त्रियामृत्युउद्वाहंपत्रलेखकम् ॥ वंध्यासुतान्वितानैवकार्यार्थेप्रोषितागमम्॥ ॥ ८ ॥ शुभाऽशुभविवाहंचधान्योत्पत्तिरथोनवा ॥ विश्राममात्मनाचैवसारात्सारं समुद्धृतम् ॥ इतिश्रीप्रश्नचूडामणिसारेसंज्ञाप्रकरणम् ॥ समाप्तम् ॥

भाषाटीका.

प्रथम स्त्री वा पुरुषकी मृत्यु विवाह प्रश्न पत्रज्ञान वंध्याको पुत्र परदेशीका आना धान्यउत्पत्ति आदि संज्ञाध्याय लिखा है ॥ इति प्रथम प्रकरणं समाप्तम् ॥

मूल ।

अथ दुई २ तीन ३ पंच ५ अष्टा ८ पंच ५ अष्टा ८ दूई २ तीन ३ चौबे ४ रेका १ सप्त ७ छका ६ चौबे ४ रेका १ चौकुटी त्रिगुणनीयं ॥ १ ॥ वर्गागमेष्टीभर्भागोअक्षरःपंचभिस्तथा ॥ स्वरैर्द्वादशभिर्भागस्ततोनामप्रसिद्ध्यति ॥ २ ॥ पृच्छकादौवदेद्वाक्यंफलोच्चारंतथापिवा ॥ तस्योपरिफलंसर्वलाभालाभंजयात्मिकम् ॥ ३ ॥ विस्मयोयेनवाक्येनसाचिंतासंशयात्मिका ॥ भवंत्यर्थसमस्तानिसारासारंसमुद्धृतम् ॥४॥

चक्रम् ।

अ	उ	ओ	२	क	ङ	झ	९	ड	थ	प	४	म	व	ह	८
आ	ऊ	औ	३	ख	च	ञ	८	ढ	द	फ	१	य	श	क्ष	६
इ	ए	अं	५	ग	छ	ट	२	ण	ध	ब	७	र	ष	त्र	४
ई	ऐ	अः	८	घ	ज	ठ	३	त	न	भ	६	ल	स	ज्ञ	१

भाषाटीका.

प्रश्नकर्ताके वाक्य जो प्रथम उच्चारण को उस्की मात्रा वर्णोंको जोड पिंड बना लेवें ॥ वर्ग निकालना होय तो (८) आठ से भाग देना अक्षर निकालने के लिये पांच (५) से भाग देना मात्रा निकालने के लिये द्वादश (१२) से भाग देना तब मुष्टिगत वस्तुका तथा चौरादिकका नाम निकल आवेगा । यह अभ्याससे होनेवाला है ॥ प्रश्नकर्ताकी वाक्यके अक्षर गिने अथवा फलका जो नाम हो उस्के अक्षर गिनकर पूर्व पिंड बना लाभादि कहै ॥

मूल ।

आदिवर्णप्रमाणेनज्ञेयाचिंताविशेषतः ॥

अकारादिस्वराज्ञेयावर्णाःकाद्यास्मृताबुधैः
१॥ मात्रावर्णप्रभेदेनप्रश्नंग्राह्यंविचक्षणैः ॥
अ इ उ स्वरान्हस्वादीर्घाः आ ई ए ऐ ओ
स्मृताः ॥ ५ ॥ ऊ औ अं अः श्चदग्धाः
संज्ञाप्रकीर्तिताः ॥ प्रथमस्यतृतीयस्यचो
त्तराक्षरसंज्ञका ॥ अधरोद्विचतुर्थंतुपंचमो
भयपक्षकः ॥ ७ ॥ आलिंगतास्वरान्हस्वा
दीर्घाश्चैवाभिधूमिताः ॥ वर्गाक्षरंपंचमंच
दग्धंचैवप्रकीर्तितम् ॥ ८ ॥ वर्णःस्वरास्त
थाचैवषट्स्थानानिप्रकीर्तिताः ॥ उत्तरा
धरसंयोगात्षट्भेदाप्रभवंतिहि ॥ स्वराद्ब
लीयान्वर्णश्चवर्णाद्वर्गोबलीभवेत्॥अधरादु
त्तरंचैवबलीयांश्चप्रकीर्तितम्॥आलिंगिता
तुसंयुक्तंउत्तरश्चप्रकीर्तितम्॥ तदुत्तरोत्तर

विज्ञेयश्चूडामणिपरिस्फुटम् ॥ अभिधूमित
संयुक्तंअधरंचप्रकीर्तितम् ॥ अधराधरमेवं
हिकथितंज्ञानशालिभिः ॥ आलिंगितंतुसं
युक्तंअधरंचप्रकीर्तितं ॥ उत्तरोत्तरविज्ञेयं
चूडामणिपरिस्फुटम् ॥ अभिधूमितसंयुक्तं
उत्तरंचप्रकीर्तितम् ॥ तदुत्तराधरौज्ञेयौगुरु
गम्यौमनीषिभिः॥इतिउत्तरादिप्रकरणम् ॥

भाषाटीका.

यदि प्रश्नाक्षर संपूर्ण ना मालूम रहे तो आदि-
के अक्षरसे प्रश्न कहै ॥ सो अकारादि स्वर कादि
व्यंजन जानने ॥ अ इ उ ह्रस्व आई ए ऐं ओ
दीर्घ ॥ ऊ औ अं अः दग्धाक्षर होते हैं ॥ इन्मे १।३
की उत्तर संज्ञा । २ । ४ । अधर संज्ञा ५ अक्षरकी
अधरोत्तर संज्ञा होती है ॥ स्वर आलिंगित । दीर्घ
अभिधूमित ॥ वर्गका पंचम अक्षर दग्ध होता है ॥

इसप्रकार स्वरवर्णोंकी ६ संज्ञा होती है ॥ इस-प्रकार बली जानने. स्पष्ट अर्थ है ॥

मूल ।

अथ पंचवर्गप्रकरणम्

अन्यंतुसंप्रवक्ष्यामिपंचवर्गनवाक्षरम् ॥ ये नाविज्ञानमात्रेणत्रैलोक्यंपश्यतिस्फुटम् ॥ अ क च ट त प य श वर्गाः आलिंगिता उत्तरासर्वलाभकराः॥ पुरुषाक्षराब्राह्मणाः । आ ऐ ख छ ठ थ फ र षा अधराक्षत्रियः। इओ ग ज ढ द ब ल साः उत्तरोत्तराला भदाश्चवैश्याः । ई औ घ झ ढ ध भ व हाः शूद्राः । ऊ औ ङ ञ ण न मा अं अः दग्धाअंत्यजाशब्दाः ॥ इतिपंचवर्गाः ॥

भाषाटीका ।

शुभाशुभ कार्य ज्ञान तथा जातिज्ञानके लिये

अ क च ट त प य श पुरुषाक्षरा ब्राह्मणाः	आ ए ख छ थ फ ठ र ष अधरः	ग ज ढ द व ल स इ ड	ई डो घ झ ढ ध भ व ह	ऊ डौ ङ ण ञ न म
सर्वलाभकः शुभफलदः आलिंगतः उत्तरः	क्षत्रियः अधरः नास्ति ला- भकरः	उत्तरोत्तरः वैश्याः लाभकरः	शूद्रा अधराः	अंतजा दग्धाः

अथ क्षेत्रपाल धनलाभ कोश प्रमाणादि चक्रम् ॥

अ आ इ ई उ ऊ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	वर्ग
ध्वज	धूम्र	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	क्षेत्र पल
लाभदा यकहै	मृत्यु कर्ता है	लाभ	बंधन	धनला भ	हानि	धन लाभ	मृति कारक	कार्य
पूर्व	अग्नि	दक्षि ण	नैऋत	पश्चिम	वायु	उत्तर	ईशान	दिशा
ग्राममे आगाहै	१ योज नके वी चमेहै	२० यो जनमे	६ योज नके वी चमे	१२ यो जनके वीच	२४ यो जनमे है	२८ यो जनमे	३२ यो जनमे	अंतर

॥ अथ कालज्ञानचक्रम् ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
अ ई उ डो अ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ दं ध नं	प फ ब भ मं	य र ल व	श ष स ह
दिन ३ वा ७	वष १	पक्ष १	मास ६	मासं १	मास ६	मासं ३	वर्ष १

॥ भूत भविष्यतवर्तमान ज्ञानचक्रम ॥

भूत	वर्तमान	भविष्यत्
वृष सिंह गज ध्वांक्ष अ ई उ	खर ध्वज ई एं ऐ ओ	धूम्र श्वान ऊ ओ अं अः

॥ अथ मूकप्रश्नम् ॥

जीवाक्षर	धातु अक्षर	मूलाक्षर
क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ अ आ ई ए ओ अः श ह	त थ द ध प फ ब भ उ ऊ अं व स	ङ ञ ण म ल ई ए औ र ष

अथ वर्णज्ञानप्रश्नम् ॥

श्वेत	रक्त	पीत	हरित	कृष्ण	धूम्र	पिंगल	नील	वर्ण
अ	क ख	च छ	ट ठ	त थ	प फ	य र	श	
आ	ग घ	ज झ	ड ढ	द ध	ब भ	ल	ष	वर्णाः
	ङ ए	ञ	ण	न	म उ	व	स	
अः	ऐ	इ ई	ओ	अं	ऊ		ह	
			औ					

मूल ।

अतीतंगोहरिध्वांक्षागजेवर्तमानंचध्वजे ॥
खरेअनागतंविद्याद्धूम्रेचैवतुकूकरे ॥ दग्धे
तीतंविजानीयाद्वर्तमानंआलिंगिते ॥ अभि
धूमितप्रश्नोचभविष्यतिनसंशयः ॥ इति
भूतभविष्यत्वर्तमानप्रकरणम् ॥ उत्तरेस
र्वलाभंतुपृच्छकस्यशुभंवदेत् ॥ अधरेतुभ
वेदुःखंवर्गराशौविनिर्णयः ॥ दिवसमालिं
गितेप्रश्नेषण्मासमभिधूमिते ॥ दग्धेसंव
त्सरंप्रश्नोपुरःसंख्यानविद्यते ॥ अवर्गेच

स्थितंग्रामेकवर्गेयोजनांतरे ॥ च वर्गेविंश तिप्रोक्तं ट वर्गेषट्प्रकीर्तितम् ॥ त वर्गे द्वादशंप्रोक्तंचतुर्विंशति प वर्गके ॥ अष्टा विंशाद्यवर्गेचद्वात्रिंशति श वर्गके ॥ उत्तरे नवतिंविद्यादधरैस्तुशतंवदेत् ॥ आलिंगि तेसमंप्रोक्तंद्विगुणंचाभिधूमिते ॥ त्रिगुणं दग्धप्रश्नेचचातुर्गुण्यंचमिश्रके ॥ इयम ध्वनिसंख्याचदिनमासैश्चवत्सरैः ॥ अथ॥ ध्वजोधूम्रस्तथासिंहश्वानवृषखरोगजः ॥ ध्वांक्षश्चैवक्रमेणैवक्षेत्रपालाःप्रकीर्तिताः ॥ ध्वजेप्रश्नेदिनंज्ञेयंसिंहेपक्षस्तथैवच ॥ वृ षेमासश्चविज्ञेयोगजेमासत्रयंतथा ॥ श्वाने खरेचषण्मासंधूम्रेध्वांक्षेचवर्षकम् ॥ इति कामंवदेत्प्रश्नंसर्वकार्याणिचिंतयेत् ॥ इति शुभाशुभप्रकरणम् ॥

भाषाटीका.

यह सब फलादेशसे कहना सो पीछे चक्रोंमें स्पष्ट अर्थ लिखा है परंतु आय बनानेका प्रकार यह है कि प्रश्नकर्ता प्रथम जो वाक्य कहै उस्का पूर्व अक्षर ग्रहण कर चक्रसे आय देख लेना ध्वजादि।

मूल।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिलाभालाभंयथाभवेत्
उत्तरेचभवेल्लाभोनास्तिलाभोधरेषुच ॥ पू
र्वस्थानेमहालाभोआग्नेय्यांमरणंध्रुवम् ॥ द
क्षिणेविजयंलाभोनैर्ऋत्यांबंधनंमृतिः ॥ प
श्चिमेसर्वलाभश्चवायवेहानिकारकं॥ उत्तरे
धनधान्यंचईशान्यांनिधनंभवेत् ॥

भाषाटीका.

अब हम लाभप्रश्न कहते हैं ॥ उत्तरसंज्ञक अ-क्षरोमें लाभ ॥ अधर अक्षरोमें लाभ नहीं होता ॥ यदि आया पूर्वमें हो तो लाभ अग्निमें मरण दक्षिणमें

विजय निर्ऋतिमें मरण दक्षिणमे विजय निर्ऋतिमें मरण पश्चिममें सर्व लाभ वायुमें हानि उत्तरमें धन ईशानमें निधन क्रमसे कहै ॥

मूल ॥

अथ रोगप्रकरणम् ॥

उत्तरेमोचकंदोषंअधरेअंतिकंविदुः ॥ मि
श्राक्षरेकष्टसाध्यं दिनसंख्यामतःपरम् ॥
आलिंगितेदिनंप्रोक्तंमासंचावाभिधूमिते ॥
वर्षाणिदग्धप्रश्नेचवर्गराशौविनिर्णयः ॥
आर्द्रादिमृगान्तंचमध्येमूलंप्रतिष्ठितम् ॥
रवींदुनामनक्षत्रमेकनाड्यांगतोयदि ॥ त
दामृत्युंमहाकष्टंचूडामणिपारिस्फुटम् ॥ इ
तिरोगप्रकरणम् ॥ संग्रामेमल्लयुद्धेचविवा
दोत्पातदर्शने ॥ उत्तरैस्तुभवेद्युद्धंमिश्रतो
जयमावहेत् ॥ समतामिश्रितेप्रश्नोअधरे

स्तुपराजयः । चैत्रादिमतमासाश्चनेत्रघ्नंति
थिभिर्युतम् ॥ वेलात्यशेषंशून्यंपूर्वेएकंप
श्चिमेद्वौ याम्येत्रिभिःसौम्येभूवलंकथ्यतेबु
धैः ॥ एतानिगजयुद्धानिद्यूतमल्यंचकुकुट्टे॥
लावकाद्यैश्चपक्षैश्चक्रमेणैवंवदेद्बुधः ॥इति
भूवलम् ॥

भाषाटीका.

आर्द्रासे ले मृगशिर पर्यंत मध्यमे मूला हो ऐसे सर्वाकार नक्षत्रलिखे उन्मे यदि सूर्य नक्षत्र चंद्रमा नक्षत्र उसका नाम नक्षत्र एकत्र हो जाय तो मृत्यु होती है यदि जन्ममें मारक योग ना होतो भी मृत्युसमान कष्ट देता है ॥ अगर ऐसे योगमें सं-ग्राममें जाय तो मर जाता है मल्लोंके युद्धमें तथा विवादमें हार जाता है॥ उत्तरोंमें युद्ध मिश्रितमे सम अधरोंमे पराजय होता है ॥ चैत्रादिं गतमास २ से गुण गत तिथि जोड़कर ४ से भाग देवे यदि शून्य

बचे तो खाडेके पूर्व भाग बैठनेसे जय होती है एक बचे तो पश्चिममे २ बचे तो दक्षिणमे ३ बचे तो उत्तरमे हाथीयोंका युद्ध जूआ मल्लयुद्ध कुकुट वटेरे प्रभृतिका कहना ॥

मूल ।

रविगुरुआग्नेय्यांचसोमेशुक्रेचनैऋते ॥ शनिरंगारकोवायौईशान्यांसोमवासरे ॥ सन्मुखेनम्नकालस्यहन्यंतेनचसंशयः ॥ इति नम्नकालः ॥ छायापादाब्धिसंयुक्तमष्टभक्तावशेषकम् ॥ वाममार्गेणगण्यंतेयच्छेषे मृत्युमादिशेत् ॥ पूर्वोक्तजयसंज्ञाचविजयं सांजकोपरि ॥ उभयोर्नामराश्यैक्यंत्रिभिर्भागंसमाहरेत् ॥ एकंशून्यंजयेज्जेताद्वाभ्यां चाविजयोजयः ॥ इतिमल्लयुद्धम् ॥ उदयादिगतानाड्योवेदाढ्यात्रिभिर्भाजिताः ॥ यु

ग्मेगौरंशशौश्वेतंशून्येचकृष्णवर्णकम् ॥
हन्यंतेनात्रसंदेहोचूडामणिपरिस्फुटम् ॥
वारंयामंध्रुवैक्यैक्येत्रिभिर्भक्तावशेषकम् ॥
युग्मेगौरंशशिश्वेतंशून्येकृष्णस्यनाशनम्॥
इति जयाजयप्रकरणम् ॥

भाषाटीका.

रवि बृहस्पतिवारमें अग्निमें सौम्य शुक्रको नैऋत्यमें शनिमंगलको वायुमें. चंद्रवार ईशानमें नग्नकाल होता है. जो सन्मुख जायगा वह मारा जाता है. अथ अपने पादोंकी छाया माप चार ४ जोड़ आठ ८ से भाग ले शेष उत्क्रमसे गिने जो शेष बचे वह मृत्युको प्राप्त होता है ॥ पूर्व कही जयसंज्ञा जिसके साथ युद्ध कर्ना हो उन दोनोंके नामकी राशि एकत्र कर तीनसे भाग देवे। यदि एक वा शून्य मिले तो जय कहे. अन्यथा दूसरेका विजय कहै ॥ अन्यच्च ॥ प्रश्नलग्नकी इष्टघटीमें ४ और जोड़ तीनसे भाग

देवे. यदि एक बचे तो गौर (पाटल) दो बचें तो श्वेत-पक्षी शून्य बचे तो कृष्णवर्णके पक्षी नाशको प्राप्त होते हैं ॥ अथवा वार प्रहर ध्रुवा जोड़ तीनसे भाग देवे और पूर्वोक्त फल कहै ॥

मूल ।

कचटादिचतुष्कंचय अ आ इ ए औ अः॥ शहाजीवाक्षराज्ञेयाएकविंशतिमानतः ॥ त पाष्टौ उ ऊ अ व समधातुवर्णत्रयोदयः ॥ ङ ञ ण न म ल ई ऐ ओ रेखामूलभवाक्षराः ॥ जीवाक्षरेभवेज्जीवोधातुर्धात्वक्षरेभवेत्॥मूलाक्षरेभवेन्मूलंचिंतामणिपरिस्फुटम्

भाषाटीका ।

इनका अर्थ पीछे चक्रमे लिखा है ॥

मूल ।

आलिंगितेजीवचिंताधातुचिंताभिधूमिते॥ दग्धेमूलंविजानीयाच्चूडामणिपरिस्फुटम् ॥

उत्तरेजीवचिंताचधातुजीवाधरोत्तरे ॥ अ
धराधरसमादेशान्मूलचिंतामनीषिभिः ॥
व्योमदृष्टिर्भवेज्जीवोमूलंभूम्यवलोकने ॥ स
मावलोकनेधातुर्ज्ञेयोंकेवलदृष्टितः ॥ बाहु
वक्त्रशिरस्पर्शेजीवाचिंताशुभावहा ॥ हृदयो
दरकटिस्पर्शाद्धातुचिंतातुमध्यमा ॥ अन्ये
मूलंविजानीयान्नात्रकार्याविचारणा ॥ नि
रीक्षतेयदाह्युतंयांदिशांत्ववलोकने ॥ विलो
कतेस्मर्यतेयस्यांतत्रादेश्यंचभूदिशि ॥ नै
ऋतेवायसेधातुवारुण्यांजीवचिंतनं ॥ ऐं
द्राग्नेयंमूलचिंतावायव्यांजीवचिंतनम् ॥

॥ इति चिंताप्रकरणम् ॥

भाषाटीका ।

आलिंगिताक्षरोंमें जीवचिंता अभिधूमितमें धातु-

चिंता दग्धाक्षरोंमें मूलचिंता कहै ॥ उत्तराक्षरोंमें जीव-
चिंता अधरोत्तरमें धातुजीवचिंता कहै ॥ अधराधरमें
मूलचिंता कहै ॥ यदि प्रश्नकर्ता आगमनसमयमें
आकाशको देखे तो जीव पृथिवीको देखे तो मूल सम
देखे तो धातुचिंता केवल दृष्टिमात्रसे कहै ॥ बाहु
मुख शिरके स्पर्शमें जीवचिंता कहै । हृदय उदर क-
टिको स्पर्श करनेसे धातुचिंता कहै ॥ इनके विना पाद
जंघादिस्पर्शमें मूलचिंता कहै ॥ यह स्पर्शसे प्रश्न
कहै ॥ यदि नैऋत्य दक्षिणकोणको देखे तो धातु
चिंता कहै पश्चिमको देखे तो जीवचिंता कहै । पूर्व
अग्निको देखे तो मूलचिंता कहै ॥ वायुकोणको देखे
तो जीवचिंता कहै ॥ यह दिशाको प्रश्नकर्ताकी
दृष्टिसे कहै ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिमुष्टिभेदश्चउत्तमम्॥ये
नविज्ञानमात्रेणआश्चर्यंजायतेनृणाम् ॥ अ

वर्गंतुभवेत्श्वेतंरक्तंचैवकवर्गकम् ॥ चवर्गं पीतवर्णंतुहरितंतुकवर्गकम् ॥ तवर्गंकृष्ण वर्णंतुपवर्गंधूम्रउच्यते ॥ यवर्गंहरितंज्ञेयं कृष्णंचैवशवर्गकम् ॥ अ आ श्वेतंस्थितं रूपं इ ई पीतंनसंशयः ॥ उ ऊ स्याद्धूम्र वर्णंतु ए ऐ रक्तंनसंशयः ॥ कर्बुरेतुभवेदो औ कृष्णमेकादशस्वरं ॥ अंतिमञ्चपुनःश्वे तमेतेद्वादशस्वराः ॥ इतिमुष्टिज्ञानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिलग्नवर्णंतुउत्तमम् ॥मे षेरक्तंवृषेश्वेतंहरितंमिथुनेतथा ॥ कर्कटेश्वे तरक्तंचसिंहेपाण्डुरमेवच ॥ कन्याविचित्रव र्णंचतुलायांचैवकृष्णकं ॥ पिशंगंवृश्चिकेज्ञे यंधनुषिचैवकर्बुरम् ॥ मकरेवकवर्णंचघटे पीतंतथास्मृतम् ॥ मत्स्याभंभवेन्मीनेवर्णं चैवनसंशयः ॥ इति ॥

भाषाटीका ।

प्रश्नकर्ता जो प्रथम अक्षर मुखसे कहै वह चक्रसे देख मुष्टिकी वस्तुका रंग कहै ॥ अथवा संदेह हो जाय तो पूर्वोक्त चक्रमें अंगुली रखवाकर कहै ॥ इसी प्रकार प्रश्नलग्नसे वर्ण कहै ॥ अर्थ स्पष्ट है चक्र देखें ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिसेनायाश्चचलाचलम्
येनविज्ञानमात्रेणआश्चर्यंजायतेनृणाम् ॥
तिथिवारंचनक्षत्रमष्टभागावशेषकम् ॥ ए
कयुग्मेस्थितंतत्रतृतीयेयुद्धदारुणम् ॥ चतु
र्थेचलयित्वातुपुनस्तत्रैवसंस्थितः ॥ पंच
मेमार्गवर्तीत्वंषष्ठेसीमांगतोरिपोः ॥ सप्तमे
द्वारवर्तीत्वंशून्येग्रामंचगृह्यते ॥ इति ॥ त्रि
नाडीकृत्तिकाचैवफणिचक्रेरिपुर्यदि ॥ दिन
नक्षत्रसंयुक्तंलोहपातंसुदारुणम् ॥

॥ इतिलोहपातः ॥

भाषाटीका ।

अथ सेनाका स्थिरास्थिर आश्चर्य कहते हैं ॥ कि तिथि वर्तमानवार और नक्षत्र इकट्टे कर आठ ८ से भाग देना यदि १।२ मिलें तो वहांही बैठा कहै ॥ यदि ३ मिलें तो युद्धकर्ता ४ मिलें तो जाकर आगे फिर आ गई ५ मिलें तो आगे चलरही है ॥ ६ मिलें तो शत्रुकी हद्दपर है ७ मिलें तो शहरके द्वारपर है ॥ ० शून्य मिले तो शत्रुके नगरमें कहै ॥ सर्पचक्रमें दिननक्षत्रसे युक्त यदि शत्रुका नक्षत्र होय तो उस दिन शत्रुपर लोहपात अथवा शृंखलाबंधन कहै ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिमृगयाप्रश्नमुत्तमम् ॥ लुब्धनामाक्षरोराशिर्यत्रतद्दिनचंद्रमाः ॥ तन्मध्येयदिसौम्यास्स्यात्तदामृगयाचलभ्यते ॥ दुष्टखेटैर्दुष्टपशुग्रहोनस्यात्पशुर्नहि ॥ रोहिणीश्रवणंपुष्यंमृगंचित्राश्विनीतथा ॥

स्वातिरौद्रंतथाज्येष्ठामूलाचैवपुनर्वसु ॥ ए
तानिद्वादशर्क्षाणिद्विद्वियोजनसंज्ञया ॥ अ
न्यानिसूक्ष्मऋक्षाणिक्रोशमेकंप्रमाणतः ॥
सूर्यभाद्दिनभंगुण्यंमध्येत्रीणिप्रतिष्ठितम् ॥
त्रिकंत्रिकंतुपूर्वादिसंहारेणप्रदापयेत् ॥ यां
दिशंचास्थितश्चन्द्रस्तस्मिन्नेवहिपारधिः ॥

॥ इति मृगयाप्रकरणम् ॥

भाषाटीका ।

अथ शिकार खेलनेका उत्तम प्रश्न कहते हैं ॥
शिकारीकी नामकी राशिसे जिस राशिमें चंद्रमा होय
उसके मध्यमें यदि शुभ ग्रह होवे तो श्रेष्ठ पशु हरि-
णादिकका शिकार मिलता है. यदि पापी ग्रह हो तों
दुष्ट पशु शूकरादि शिकार मिलते हैं । अगर कोईभी
ग्रह ना होय तो उस दिन शिकार नहीं मिलता है ॥
यदि रोहिण्यादि पुनर्वसुपर्यंत उक्त नक्षत्र बीचमें

होयँ तो २ योजन अर्थात् ८ आठ कोशके बीचमें शिकार मिलेगा, अन्य नक्षत्र होयँ तो कोसभरसे मिलेगा ॥ जितने ग्रह जिस राशिके स्वामी हों उस राशीके अनुसार वर्णवाला शिकार मिलेगा. इत्यादि गुरुद्वारा समझ ले. विस्तारभयसे नहीं लिखा ॥ अथ दिशाज्ञान ॥ सूर्यनक्षत्रसे उस दिनके नक्षत्रपर्यंत गुणे मध्यमें तीन २ नक्षत्र जोड़े जिस दिशामें चंद्रमाका नक्षत्र हो उस दिशासे शिकार मिलेगा इति ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिगर्भप्रश्नंचउत्तमम् ॥ अचतयाश्वताश्वतेवर्गाउत्तरागर्भदायिनः। कटपशायदाप्रश्नेतदागर्भोनविद्यते ॥ उत्तरैस्तुभवेत्पुत्रोअधरेदुहितातथा॥ खंडपर्वे चवर्गराशौविनिर्णयः ॥ कांताभिधानंगुणितंमुनींद्रैस्तिथ्यायुतंनागहृतंचशेषम् ॥ स

मेचकन्याविषमेचपुत्रोनिःशेषभागंमरणा यनूनम् ॥ तिथिवारंचनक्षत्रंगर्भिणीनाम संयुत ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषंचफलमा दिशेत् ॥

भाषाटीका ।

यदि अ वर्ग च वर्ग त वर्ग य वर्ग उत्तर होय तो गर्भ होता है ॥ क वर्ग ट वर्ग प वर्ग श वर्ग प्रश्नमें होय तो गर्भ नहीं होता ॥ उत्तरोंमे पुत्र, अधरोंमें कन्या होती है ॥ प वर्गमे नपुंसक होता है॥ **कांताभिधानमिति** ॥ स्त्रीका नाम वा प्रश्नलग्नसे सप्तम स्थान सातो ७ गुण वर्तमान तिथि मिलाय ८ से भाग देवे यदि सम अंक २।४।६ मिलें तो कन्या यदि १।३।५।७ विषम अंक मिलें तो पुत्र गर्भमें होता है ॥ अथवा वर्तमान तिथि नक्षत्र गर्भिणीका नाम इकट्ठे कर सातसे भाग देवे सम २।४।६ अंक मिले कन्या

१।३।५।७ विषम हो तो पुत्र होता है ॥ इति गर्भप्रश्नाधिकारः ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिछत्रभंगमनुत्तमम् ॥
राज्ञःपराजयेवापिअन्यंवायस्तुपृच्छति ॥
यत्रप्रश्नेतृतीयेचपतंतिअधराक्षराः ॥ छत्र
पातंवदेच्छीघ्रंनपातंउत्तरैर्भवेत् ॥ आलिंग
तेतुमासेनषण्मासैश्चाभिधूमके ॥ दग्धेसंव
त्सरंप्रोक्तंसंख्यापूर्वविधानतः। इतिछत्रभंगः

भाषाटीका ।

यहां प्रश्नमें तृतीय अधर अक्षर पतन हों तो शीघ्र छत्रभंग होता है. उत्तरोकर्के पात नहीं होता. आलिंगितोंमें १ मासकर्के अभिधूमकमें ६ माससे दग्धमें वर्षमें छत्रभंग कहै ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिभूमिभंगस्यलक्षणम्॥

स्वचक्रेपरचक्रेवानृपातीनांहितायवै ॥उत्तरे चअभंगंभूभंगमधरेषुच ॥ मिश्राक्षरैर्भवेत्सं धिर्वर्गराशौविनिर्णयः ॥ कृत्वाचाष्टदलंचक्रं वर्गांस्तत्रनियोजयेत् ॥ यांदिशांचैवयद्वर्गः प्रश्नतःपतितोधरः ॥ तद्दिशिभूमिभंगंच मार्गसंख्याचवर्गतः ॥ इतिभूमिभंगलक्ष णम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिकोटभंगस्य लक्षणम् ॥ स्वराज्ञोभज्यमानस्तुशत्रुभिः कोटिशोधनैः ॥ रेखाकोटाकृतिर्यास्यात्तत्को टिंपरिकल्पयेत् ॥ अवसादिकवर्गास्तुस्तत्र तत्रचवेशयेत् ॥ वर्णानांचोत्तरावर्गाःकोटि मध्येतुविन्यसेत् ॥ अधराबाह्यतोविंद्यादेवं कोटिंप्रकल्पयेत् ॥ यदुत्तराधिकप्रश्नोको टिभंगंनविद्यते ॥ अपरेभिद्यतेशीघ्रंमध्य

स्थेशमनंभवेत् ॥ दग्धेत्वन्यवासीनांचदंडं शत्रुषुयोजयेत् ॥ यत्रवर्गेधराःप्रश्नेतद्दिशि भंगमादिशेत् ॥ दिनसंख्याप्रकर्तव्याभंग स्यशोभनस्यच ॥ वर्गसंख्याततोज्ञात्वा तिथिमासादीनांक्रमात् ॥ इतिकोटिभंगप्र करणम् ॥

भाषाटीका।

उत्तरमें अभंग अधरोंमें भूमिका भंग मिश्रोंमें संधि होती है ॥ अथ किलेका टूटना लिखते हैं ॥ किलेकी भांति रेखा बनाकर अ क च आदि वर्ग आरोपण करे ॥ उत्तर वर्ग कोटिके मध्यमें निक्षेप करे अधर किलेके बाहिर स्थापन करे । यदि प्रश्नकालमें उत्तर अक्षर मिले तो किला टूटता नहीं अधरादि हों तो टूट जाता है मध्यकेमें हो तो नाश कहै. दग्धोंमें शत्रुको दंड, जिस वर्गमें अधर हो उस दिशासे भंग कहै ॥ वर्गसंख्यानुसार तिथि मास कहै ॥

मूल ।

ग्रामभंविन्यसेत्कोणेईशान्यांचैवलिख्यते।
प्रवेशनिर्गमौचैवंक्रमेणानेनाविन्यसेत् ॥ र
विभौमावग्निदाहंयुद्धंराहुशनैश्वरा: ॥ क्रूरे
रिपुभयंसौम्येशुभंभूयान्नसंशय: ॥ इतिग्रा
मचक्रम् ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिपरोक्षंमंत्र
भूपते: ॥ त्रिविधंलक्षतेतत्रधर्मकामंचविग्र
हम् ॥ आलिंगितेभवेद्धर्मंकामंचैवाभिधूमि
ते ॥ यदादग्धंप्रविष्टंतुविग्रहंनचसंशय: ॥
इतिभूपालगुह्यप्रकरणम् ॥ अथात:संप्रव
क्ष्यामिनीराणांप्रेरणंशुभम् ॥ वर्षाकालेवि
शेषेणवर्षणंचाप्यवर्षणम् ॥ अचतयावृष्टि
दाप्रोक्ताकपटशानैववृष्टिदा: ॥ प्राप्यतेचो
त्तरेवारिनवारिचाधरेभवेत् ॥मिश्रैस्तुतुच्छ

तोवारिपाषाणमनुनासिकैः ॥ इतिवृष्टिप्र करणम् ॥

भाषाटीका ।

ग्रामका नक्षत्र ईशान कोणमें लिखे इसी प्रकार प्रवेश निर्गम लिखे उन्मे यदि सूर्य मंगल हो तो अग्निदाह होता है राहु शनि हो तो युद्ध होता है। पापी ग्रह हो तो भय शुभ हो तो सुख कहै ॥ अथ राजाओंका मंत्र धर्म काम विग्रह होता है । आलिं-गितोंमें धर्म अभिधूमितमें काम दग्धमें विग्रह होता है ॥ ॥ अथ वृष्टिज्ञान ॥ वर्षाकालमें वर्षा होनी वा ना होनी ॥ यदि प्रश्नाक्षर अ च त य वर्गके हों तो वृष्टि कर्ते हैं ॥ क प ट श य ह वृष्टि नहीं होती है ॥ उत्तरोंमें जल वर्षता है अधरोंमें वृष्टि नहीं होती ॥ मिश्रोंमें अल्पवृष्टि, अनुनासिकोंमे पाषाण (गढे) वर्षते हैं ॥

मूल ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिभुविश्चैवशुभाशुभम्॥
उत्तरैस्तुशुभाभूमिर्वापिक्षेत्रगृहादिषु ॥ अ
धरैस्त्वशुभाप्रोक्तासर्वकार्येषुसर्वदा ॥ इति
भूमिशुद्धिः ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिअर्घकां
डस्यलक्षणम् ॥ भूपादीनांचलाभायवा
णिज्यानांविशेषतः ॥ संक्रांतिऋक्षंतिथिवा
रयुक्तंत्रिभिर्विनिघ्नंफलमुक्तवाच्यं ॥ एकेन
वृद्धिश्चसमांद्विशेषेशून्येनशून्यंनतुसंशयंच॥
रिक्तातिथिःक्रूरदिनंचषष्ठीसंध्याक्रमेवापिदि
नोदयेऽपि ॥ ज्येष्ठायमार्द्राशततारकाचस्वा
तौभुजंगेत्वथसंक्रमेच ॥ तदामहर्घंप्रकरो
तिनूनंसत्यंतथार्य्यामुनयोवदंति ॥ इति
अर्घकांडम् ॥

भाषा इस के अनन्तर भूमि की शुद्धि कहते हैं। उत्तराधर प्रष्ठ में होय तो वापि खेत गृह वनाने को भूमि श्रेष्ट होती है। अधरोंसे अशुभ कही है ॥ इति ॥ अब व्यापारी और राजाओं के लाभार्थ अर्घकांड लिखते हैं। कि संक्रांति नक्षत्र तिथि वार इकठ्ठे कर तीन से भाग देना १ बचेतो अन्नवृद्धि २ मिलेतोसम ०। ३। मिलेतोशून्यसंहग होताहै। ज्येष्ट भरणी, आद्रा, शतभिष, स्वाति श्लेषा, नक्षत्र में संक्रांति होय बहुत तेजी अन्नादि की कहै ॥

॥ इति अर्घ कांडम् ॥

मूल–रविभाद्दिनभंयावत् षट्कालिंगतमेवच। नवाभिधूमिताश्चैवदग्धा अर्कस्य संख्यया। आलिंगतेचतत्रस्थं शीघ्रलाभोभिधूमिते। दग्धचौरं तथा नष्टं नास्तिलाभं न संशयः ॥ मेषेप्राच्यांधनुसिंहौ आग्नेय्यां वृष दक्षिणे। मृगकान्ये च नैऋत्यां मिथुनेपश्चिमांदिशि। वायुकोणेतुलराशौ उदीच्यां कुंभ उच्यते। ईशानभागेमीने च दिक् ज्ञानं कथितंबुधैः रविभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमम्। त्रिशूले संस्थितेधिष्णे वस्तुनैवचलभ्यते। गर्भस्थे चविलंवेन वाह्येनैवं चलभ्यते ॥ इति नष्टवस्तु प्रकरणम् ॥

भाषा, अथ नष्ट वस्तु का ज्ञान ॥ सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र पर्यंत गिने उन्मे ६ तक आलिंगत ९ तक अभिधूसित १२ तक दग्ध। फल आलिंगत में वस्तु वहां ही स्थित है। अभि भूसित में शीघ्र लाभ होता है। दग्ध में चौर भाग गया और धन नहीं मिलता। दिशा ज्ञान मेष लग्न होय तो पूर्व। ९। ५ अग्निं २ दक्षिण। १०। ६ नैऋत ३ पश्चिम ७। ८ वायु कोण ११ उत्तर १२ ईशान कोण को चौर जाता है। अथवा सूर्य नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र पर्यंत गिनो अगर वह नक्षत्र त्रिशूल में है, वा वाहिरहै तो वस्तु नहीं मिलती यदि मध्य में है, तो मिलजायगी ॥ इति ॥

मूल—युग्मार्कबाण तिथयोवसुभूश्चवेदा, भवनाब्धिशून्य दिहन्हिमन्मथरसाश्च तथानरेंद्रा। अंकाक्रमेण कथितजनुनामराशिः॥ इति सभाचौर प्रकरणम् ऊर्ध्वरेखाचतुःसंख्या तिर्य्यक्कोणेषु संस्थिता। कोणे कोणे त्रिशूलानि वंद्दिमोच्चं भवेदिदम्। मुखस्कंध पृष्टि कुक्षि कुषिपुच्छेचैव गुदोदरे। अंगसप्तविभागेन चक्रं भवति न संशयः। मुखेपृष्टे च नक्षत्रे मृत्यु रेव न संशयः। पुच्छे शत्रुविनाशाय स्कन्धेमासेन

सुनिदाः। उदरे द्रव्यासाध्यं च गुदेशीघ्रं विमुच्यते॥

॥ इति वन्दिमोचन प्रकरणम् ॥

भाषा, २।१२।५।१५।८।१।४।१४।४।०।१०।३२।६।१६ सभा चौर के अंक नाम राशि के क्रम से कहे बंदी मोच में ४ रेखा ऊपर ४ लिखी कोणों में शूल लिखें मुख स्कंध पीठ, मुख पुच्छ गुदा उदर यह ७ अंग विभाग से चक्र बनावे यदि नक्षत्र मुख पृष्ठ में होय तो मृत्यु. पुच्छ में शत्रु नाश स्कन्ध में १ मास तक छुट-जाना उदर में नक्षत्र होय तो धन द्वारा छूटता है, गुदा में नक्षत्र होय शीघ्र ही विना धन छूटजाता है।, इति वन्दि मोक्षः॥

सूल-अथ वार्तासत्या असत्याविति प्रश्न॥

तिथियासं च वारं च नक्षत्रंचैव संयुतम्। अष्टभक्ते शशि १ नीधि ३ वेदांगे ४।६ सत्यमादिशेत्। अन्यांके यदाप्राप्ते वार्तामिथ्या न संशयः॥ अथवा०सल्लग्ने चंद्रयुक्ते केंद्रस्थाश्चयदा शुभाः। तदा वार्ताभवेत्सत्या असत्या तुविपर्यये ॥ इति॥ नक्षत्रं तिथिवारं च योगाद्धमष्ट भाजितम्। रसाब्धिश्च यदाशेषा राजाविकरणंतदा॥ शशि नेत्र पंच शून्ये शून्या सिद्धिः प्रजायते॥ ॥ इति अधिकार प्रकरणम्॥

अथ राज प्रकरणम् ॥ नक्षत्रं तिथिवारंच योगाढ्य अष्टभाजितम्, शशिपंच रसासप्त शून्येचैव बहुकृपा। युग्मे नाति कृपाराज्ञ स्तृतीयेच चिराद्भवेत् ॥इति॥

भाषा, यह बात सांची वा झूठी है इस प्रश्न में तिथि, प्रहर दिन, नक्षत्र इन को जोड़ आठ से भाग देना यदि १।३।४।६ बचे तो वार्ता सत्य है अन्यथा मिथ्या है ॥ अथवा शुभ लग्न में चन्द्रमा होय अथवा केंद्री शुभ ग्रह होय तो बात सत्य है अन्यथा झूठ है। हम को अधिकार मिलेगा वा नहीं इस प्रश्न में तिथि वार,नक्षत्र योग जोड़ ८से भाग देवे यदि ६।४मिले तो अधिकार मिलेगा। अन्यथा नहीं ॥इति॥ राजा की मुझ पर कृपाहै वा नहीं इस प्रश्न में तिथि वार नक्षत्र योग को जोड़ ८ से भाग देवे यदि १।५।६।७।० मिले तो बहुत कृपा है। २ मिले तो कृपा नहीं ३ मिले तो आगे होयगी ॥ इति ॥

मूल–नक्षत्रं तिथिवारं च ध्रुवमेकं च संयुतम् । त्रिभिर्भक्तविशेषंच शशियुग्मेस्थिरपदम्। अधिकारं ध्रुवंनास्ति शून्येचैव नसंशयः ॥ इति स्थिर अस्थिर प्रकरणम्॥ नक्षत्र याम वारं च तिथिनाचैव संयुतम्। नवभिस्तुहरेद्भागं शेषं चैवफलंवदेत् । त्रिसप्त अवर्ण

वार्ता अष्टयुग्मे न चागमं। नवैकांपंचशेषं च चत्वारि चागमं वदेत्। रसाब्धिश्च यदाशेषं आगमनं घटिका त्रिके॥ इति गमा गमन प्रकरणम्॥ स्वच्छायात्रि- गुणीकृत्य भानुसंज्ञाच संयुता। सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषंचैवफलंवदेत्। द्विचत्वारि विलंबंच शून्येकाष्टं त्रिके श्रयम्। प्रथमेपंचमेषष्टे शेषेयात्रा तथा वदेत् तिथिंपंच गुणीकृत्यदिनभं तत्र विन्यसेत्। त्रिभि- श्चैवहरेद्भागं शेषंचैव फलं वदेत्॥ एकेनार्द्धपथंयाव- द्वाभ्यां सीमाधियोरिपु। पूर्णतद्दूरपर्यंत गमनंचैव विन्यसेत्॥ ॥ इति गमन प्रकरणम्॥

भाषा, हमारा यह अधिकार स्थिर रहेगा वा नहीं इस प्रश्न में नक्षत्र तिथि वार पहिर जोड़ ३ से भाग देना यदि १। २ मिले तो स्थिर अन्यथा शून्य० में नहीं रहेगा। परदेश गया पुरुष कब आवेगा इस प्रश्न में तिथि, वार, नक्षत्र, को जोड़ ८ से भाग दे ३ ० मिले वार्ता श्रवण मात्र है, २। ८ मिले तो अभी नहीं आता यदि १। ५ मिले तो आवेगा। यदि ४। ६ मिले तो ३ घड़ी तक आ जायगा॥ इति॥ मैं परदेश में कब यात्रा करूंगा इस प्रश्न में अपनी छाया को तीन गुण वार १२ और जोड़ सात से भागदे फल

काहै २ । ४ में विलंब ० शून्य में कष्ट ३ में भय १ । ५ । ६ यात्रा होती है ॥ अथ च ॥ तिथी वर्तमान को पांच गुण कर दिन का नक्षत्र जोड़ तीन से भाग देवे ॥ १ मिले तो शत्रु मार्ग के अर्द्ध में है २ मिले तो सीमा में है शून्य मिले तो बहुत दूर पर है ॥

मूल–सेवाचक्रं प्रवक्ष्यामि वाणिज्याद्यैर्नसंशयः । मुखेद्वौमस्तकेत्रीणि हस्तेचत्वारि तान्यपि । पादे-अष्टप्रदातव्या हृदयेक्रतु संख्यया । मुखेशिरेसदा-लाभोस्वामीविघ्नप्रदाकरे। वर्णोस्थानेनतिष्टंति हृदये श्रियसंपदा॥ इति सेवा चक्रम् ॥ तिथि वारं च यामं च सप्तभक्तावशेषकम्। शराब्धिश्चयदाशेषे शत्रोरागम-नंवदेत्। द्वित्रिषष्टे च शून्ये च शत्रोर्नैवागमंभवेत् ॥ इति ॥ शत्रुरागमन प्रकरणम् ॥ दूतप्रश्नाच्चरोचार्क्ष्यं सप्तभक्ता वशेषकम् । गमनं क्लेशं निष्फलं च भोजनं सिद्धिमेव च ॥ इति दूत प्रश्नम्॥ चंचुस्थेत्रीणिमृत्यु श्चशीर्षेत्रीणि जयप्रदाः । कंठेत्रीणिमहालाभो हृदये निधनागमम्। उदरे त्रय शुभप्राप्ति पुच्छेषट् भंगदाय काः । पादौ षट् भव पंचैव क्रमेणैव फलंवदेत् ।

नृपप्रसादे अधिकारि नित्यमेवं विलोकयेत् ॥ इति नृप प्रसाद प्रश्नम् ॥

भाषा, वणिज लोगों को हित वास्ते सेवा चक्र लिखते हैं। मुख में २ मस्तक में ३ हाथों में चार २ पादों में ८ हृदय में ७ नक्षत्र लिखे। यदि सेवक के मुख सिर में नक्षत्र होय तो स्वामी को सेवक से लाभ होता है हाथों में नक्षत्र होय तो विघ्न होता है। स्वामी को पादों में नक्षत्र होय तो चिरकाल नहीं रहता उदर में होय तो श्रेष्ट है। यह सूर्य नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र पर्यंत नराकार चक्र से फल कहते हैं। अथ शत्रु आवेगा या नहीं इस प्रश्न में तिथि वार पहिर जोड़ ७ सात से भाग देना यदि ४। ५। मिले शत्रु आवेगा। यदि २। ३। ६। १। ०। मिले तो नहीं आता॥ इति॥ दूत के मुख के अक्षर जोड़ ७ भाग दे यदि क्रम से १ यात्रा २ क्लेश ३ निष्फल ४ श्रेष्ट ५ भोजन ६ सिद्ध ७ लाभ कहे॥ इति॥ यदि पक्षि चक्र की चोंच पर तीन नक्षत्रों से मृत्यु सिर के तीन नक्षत्रों में जय कंठ के ३ नक्षत्रों में बड़ा लाभ हृदय में मृत्यु। उदर में ३ श्रेष्ट हैं पुच्छ के ६ भंग देते हैं। पादो में ६। ५। सामान्य है यह राज मे वा अधिकार में चक्र देखना॥ इति॥

मूल—यामार्द्धं तिथि वारं च चन्द्रयुक्तं विभाजितं शीघ्रं विलंबं निःफलं युग्मांशून्यतो वदेत्॥ इति शीघ्र

विलंब प्रश्नं ॥ उभयोर्नामाक्षर मात्रा द्विगुणा च चतुर्गुणा । सप्तभक्तावशेषे च पूर्णैषट्कद्वितीय के । तदाभूप सिव मध्ये द्रव्य प्राप्तिर्नसंशयः ॥ एकाब्धि श्चयदाशेषः सर्वस्वंनाशयेत्तदा । पंच त्रीणियदाशेषं भाग्यवृद्धिर्दिनेदिने ॥ इति ग्राम शुभा शुभ प्रश्नम् ॥ उभयोर्वर्णाक्षरं योज्यं स्वर व्यंजन संयुतं ॥ त्रिभि-श्चैव हरेद्भागं शून्य एके पुमान्स्मृतिः । द्विशेषे च स्त्रियास्मृत्यु कथिता मुनिपुंगवैः ॥ इति स्त्री पुरुष मृत्युज्ञान प्रश्नम् । प्रश्नाक्षरं रविभक्तं शेषांकेन फलंवदेत् । सप्तमेनवमे युग्मे षष्टेचंद्रे च कन्यका । तृतीयेशरपुत्रश्च दशमेर्ढ वयेसुतः । चतुर्थे चाष्टमें रुद्रे द्वादशे नास्तिसंततिः ॥ इति वंध्या पुत्र प्रश्नं ॥

भाषा, प्रहिर का अर्थ तिथि वार चंद्रमा इकट्ठे कर तीन से भाग देना यदि १ मिले तो शीघ्र । २ मिले तो विलंब । ३ मिले तो निष्फल प्रश्न कहै । अथ हम असुक नगर में जाना चाहते हैं लाभ होगा या नहीं ? इस प्रश्न में नगर और प्रश्न कर्त्ता के नामाचर जोड़ दुगुन चतुर्गुण कर सात से भाग देकर यदि शून्य

६ मिले तो तब राजा की भान्ति धन मिलता है निःसंदेह। यदि १। ४ मिले तो सर्वस्व नाश हो जाता है। यदि ५। ३ मिले तो उस नगर में भाग्य वृद्धि दिन बदिन होती है। इति। प्रथम स्त्री या मनुष्य मरेगा इस प्रश्न में स्त्री पुरुष के नामाक्षर स्वर व्यञ्जन सहित जोड़ तीन से भाग दे यदि १। शून्य मिले तो पुरुष दो मिले तो स्त्री की प्रथम मृत्यु कहे। वंध्या को पुत्र होगा या नहीं ? इस प्रश्न में प्रश्नाक्षर को १२ से भाग देना यदि ७। ८। २। ६। १ मिले तो कन्या ३। ५ मिले तो पुत्र होगा १० मिले तो अर्ध अवस्था में होगा यदि ४। ८। ११। १२ मिले तो पुत्र नहीं होगा। यह कहे ॥ इति वन्ध्या प्रश्न ॥

मूल—युग्मेचैकेतृतीये च दशमेनिष्फलागमम्। अर्धकार्यं चतुर्थेतुः द्वादशेचागमं भवेत्। वसुनन्दादि दिग् रुद्रे कार्यं कृत्वागमं भवेत्। मुनिषष्टेयद्राशेषे कार्यंचैवतु संशयः। पंचमेचागमंशीघ्रं कार्यार्थीजाय-ते ध्रुवम् ॥ इति कार्यार्थ प्रेक्षित प्रश्नम्॥ पंचाब्धि नववांचैकोविवाहे ऽशुभं भवेत्। द्वितीये च तृतीये च षष्टे चैवतुसप्तमें। एकादशाष्टमे शेषे शुभं सर्वं च दृश्यते। स्त्रियाश्चदशभिः क्लेशोविधवा द्वादशेवदेत्।

॥ इति ॥ अकस्मद्वान्यसुत्पत्तिश्चैकेचैवं न संशयः । सुगमनं च षट्केचद्वादशाब्धिप्रचुरागमे । अष्टमे बहु सस्यं च सप्तमेनास्ति संभवः ॥ इति धान्योत्पत्ति प्रश्नम् ॥ मनोज्ञं चन्यथाहश्यं दिग्भेचैवं न संशयः । सप्ताष्टभवांकाश्च चन्द्राग्नि रस शंकराः । फलं-चैवशुभं ज्ञेयं विलंवंच द्वितीय के ॥ इति मनोभिष्ट प्रश्न प्रकरणम्, समाप्तश्चायं प्रश्नचूड़ामणिग्रंथः ॥

भाषा, हमारा मनुष्य कार्य वास्ते गया हुआ कार्य करके आवेगा या नहीं ? इस प्रश्न में प्रश्णाक्षर को १२ से भाग देना यदि २ । १ । ३ । १० मिले निष्फल १२ । ४ मिले तो आधा कार्य कर आवेगा । यदि ८ । ६ । ८ । ११ कार्य करके आवेगा ७ । ६ मिले तो कार्य में संशय कहै । ५ मिले तो कार्य्य कर शीघ्र आवेगा अथ विवाह प्रश्न में । प्रश्णा क्षर तिथि वार नक्षत्र को १२ से भाग देना यदि ४ । ५ । ८ । १ मिले तो अशुभ २ । ३ । ६ । ७ । ११ ८ मिले शुभ होगा १० मिले तो स्त्री को क्लेश कहे । १२ मिले तो स्त्री विधवा कहै । अथ धान्योत्पत्ति में यदि १ मिले तो बिन यत्न धान्य उत्पन्न होगें १० । ११ । २ मिले तो नाश ८ । १० मिले तो प्राप्ति कहै । ८ बहुत सस्य ७ में नहीं ॥ इति ॥ यदि १० । ७

११।१।३।६ मिले तो अभीष्ट कार्य होगा २ मिले तो विलंब से कार्य होगा २।५ मिले तो शीघ्र होग ॥

इति श्री कर्पूरस्थल निवासि गौतम गोत्र शौरि अन्वयालंकृत दैवज्ञ दुनिचंद्रात्मज पंडित विष्णुदत्त वैदिककृत प्रश्नचूड़ामणौ भाषाटीका रामबाणांकभू १९५३ मिते वैक्रमेऽब्दे आषाढ कृष्णषष्ट्यां वासरे समाप्ता श्री जगदम्बायै नमः। श्रीरामचन्द्रः प्रीयतां॥

॥ अथोपयोगि चक्राणि ॥

अ	उ	ओ	२	क	ङ	झ	५	ड	थ	प	४	म	व	ह	७
आ	ऊ	औ	३	ख	च	ञ	८	ढ	द	फ	१	य	श	क्ष	६
इ	ए	अं	५	ग	छ	ट	२	ण	ध	ब	०	र	ष	त्र	४
ई	ऐ	अः	८	घ	ज	ठ	३	त	न	भ	६	ल	स	ज्ञ	१

ई० श ध्वांक्ष	पू० अ० ध्वज	अ० क० धूम्र
उ–प० गज	क्षेत्रपाल०	द० च सिंह
व० य स्वर	प० त वृष	नै० ट श्वान

४ ई १२	पू १	अ ९ । ५
उ--११	दिक्	द--२
७ वा ८	५ ३	६ नै १०

अ ई उ ऐ ओ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ त थ द ध न प फ ब भ म य
र ल व श ष स ह १ २ ३ ४ ५ २ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ । इत्यादि ॥